स्वर्गदूत हमारे स्तुति के शिक्षक हैं आइए हम उनसे सीखें

“तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।” — भजन संहिता 119:105

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पवित्र नाम की महिमा हो।
प्रियजनो, आइए हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें — वह ज्योति जो हमारे मार्ग को प्रकाशित करती है।

स्वर्ग में पवित्र स्वर्गदूत, जो दिन-रात परमेश्वर की महिमा करते हैं, स्तुति के उत्कृष्ट शिक्षक हैं। वे हमारे स्वर्गीय गायन दल हैं, जिन्हें हमें यह सिखाने के लिए रखा गया है कि स्वर्गीय रीति से हम परमेश्वर की आराधना और गायन कैसे करें। वे हमें उपदेश देने की कला नहीं सिखाते, परंतु जब बात स्तुति की आती है, तो वे हमारे सच्चे शिक्षक हैं।

पाठ 1: वे अपने आप को ढाँकते हैं

स्तुति के स्वर्गदूत (सेराफ़िम और केरूबिम) अपने बहुत से पंखों का उपयोग अपने सिर से लेकर पांव तक स्वयं को ढकने के लिए करते हैं जब वे परमेश्वर के सामने खड़े होकर उसकी महिमा करते हैं।

स्वर्गदूत हमारे स्तुति के शिक्षक हैं आइए हम उनसे सीखें

“जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, मैंने प्रभु को देखा, जो
ऊँचे और उठे हुए सिंहासन पर बैठा था; और उसके वस्त्र की झिलम झिलम मंदिर को भर रही थी। उसके ऊपर सेराफ़िम थे; प्रत्येक के
छह पंख थे: दो से उन्होंने अपने मुख ढके, दो से अपने पांव
ढके, और दो से उड़ रहे थे।” — यशायाह 6:1–2

यह हमें सिखाता है कि जब हम परमेश्वर के सामने स्तुति प्रस्तुत करते हैं, तो पहली आवश्यकता विनम्रता और शालीनता की होती है।

पर आजकल बहुत लोग परमेश्वर के सामने खुले वक्ष, नंगे पीठ, बिना ढके सिर और अशोभनीय वस्त्रों में खड़े होकर स्तुति करते हैं।

प्रश्न यह है: उन्हें यह किसने सिखाया?
किसने उन्हें आधे कपड़ों में आराधना करना सिखाया?
क्या यह परमेश्वर के पवित्र स्वर्गदूतों ने सिखाया?
नहीं!
उन्हें यह शैतान ने सिखाया है, और इस प्रकार की स्तुति का प्राप्तकर्ता स्वर्ग का परमेश्वर नहीं, बल्कि इस संसार का दुष्ट शैतान है।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

स्वर्गदूत हमारे स्तुति के शिक्षक हैं आइए हम उनसे सीखें

पाठ 2: वे पवित्रता का प्रचार करते हैं

स्वर्ग में स्तुति करने वाले स्वर्गदूत, सेराफ़िम और केरूबिम, एक-दूसरे से पुकारते हुए कहते हैं:

“पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का यहोवा; सारी पृथ्वी
उसकी महिमा से भरी हुई है।” — यशायाह 6:3

ध्यान दीजिए — वे यह बात परमेश्वर को नहीं कह रहे थे जैसे कि उसे बताया जाना चाहिए कि वह पवित्र है;
बल्कि वे एक-दूसरे को स्मरण करा रहे थे कि परमेश्वर पवित्र है, और इसलिए हर एक को पवित्र रहना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर अशुद्धता में नहीं वास करता।

यह गीत स्वर्गदूत दिन-रात गाते हैं:
“पवित्र, पवित्र, पवित्र!”

और यही गीत पृथ्वी पर संतों का भी होना चाहिए।
न कि इसलिए कि परमेश्वर को सूचना चाहिए — वह तो सदा से पवित्र है —
बल्कि इसलिए कि हम स्वयं को याद दिलाएं कि परमेश्वर पवित्र है,

स्वर्गदूत हमारे स्तुति के शिक्षक हैं आइए हम उनसे सीखें

और हमें लगातार पवित्रता का अनुसरण करना है।
यही वह स्तुति है जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है।

न कि वह गायन जिसमें व्यक्ति दोहरी ज़िंदगी जीता हो;
न कि वह आराधना जिसमें व्यक्ति व्यभिचार, मूर्तिपूजा या अन्य पापों में लिप्त हो।

क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है:

“सब मनुष्यों के साथ मेल रखने और पवित्र बनने का प्रयत्न
करो; क्योंकि पवित्रता के बिना कोई भी प्रभु को नहीं देखेगा।” — इब्रानियों 12:14

जो गीत या उपदेश पवित्रता का प्रचार नहीं करते, वे केवल शैतान के नारे हैं जो उसकी ही महिमा लाते हैं।
तुम्हें शैतान के पक्ष में होने के लिए जादूगरनी बनने की आवश्यकता नहीं;
यदि तुम उसके लिए गाते हो या पाप में जीते हुए प्रचार करते हो, तो तुम उसी के सेवक हो।

स्वर्गदूत हमारे स्तुति के शिक्षक हैं आइए हम उनसे सीखें

सुझाव और निर्देश

यदि तुम्हारे पास गायन का वरदान है, तो उसे मनोरंजन या पेशे के रूप में न लो।
परमेश्वर का कार्य कोई ब्रांड नहीं, एक पवित्र सेवा है।

दुनियावी कलाकारों की नकल न करो, जिन्हें शैतान ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए उपयोग किया है।
उनके समान बनने की बजाय, उनके लिए प्रार्थना करो कि वे उद्धार पाएं।

यदि तुम स्वर्ग के पवित्र प्रभु के लिए गाने का चयन करते हो, तो:

उचित वस्त्र पहनें।
पवित्रता का प्रचार करें।
पवित्रता में जीवन यापन करें।

प्रभु हमें मदद करे।
मरानथा!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:

स्वर्गदूत हमारे स्तुति के शिक्षक हैं आइए हम उनसे सीखें

WhatsApp